LOWER Palaeolithic culture

निम्न पुरापाषाण संस्कृति

यह संस्कृति मानव विकास एवं अवशेषों के प्राचीनतम पक्ष को प्रदर्शित करती है एवं सर्वाधिक ~~जमावों~~ जमावों के सबसे नीचले स्तर से प्राप्त होती है। अतः इसको पुरापाषाण युगीन संस्कृति कहा जाता है। यह संस्कृति पर्वतीय क्षेत्रों के विभिन्न मौसमों से, नदियों के किनारे निम्न जमाव 'बोल्डर कांग्लोमिरेट' से सम्बन्धित है जो कि समय-समय पर जलवायु परिवर्तनों एवं इसके फलस्वरूप नदियों में प्रभूत उतार-चढ़ाव को सम्बोधित करती है।

इस संस्कृति के उपकरणों में विविधता परिलक्षित होती है एवं एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र के उपकरणों में भिन्नता। ये उपकरण मुख्यरूप से दो भागों में विभक्त है, उत्तरी क्षेत्र एवं दक्षिणी क्षेत्र। उत्तरी क्षेत्रीय संस्कृतियां हिमालय क्षेत्र से प्राप्त होती हैं। इस क्षेत्र में प्रथमतः एक विशेष प्रकार के उपकरण पाकिस्तान स्थित पंजाब की सोहन घाटी से उपलब्ध हुए हैं। ये उपकरण चापर-चापिंग हैं एवं सोहन घाटी के विभिन्न सोपानों से उपलब्ध होते हैं। अतः इस संस्कृति को सोहन संस्कृति या सोहनियन के नाम से जाना गया। इस उपकरण समूह में पेबुल पर निर्मित एक पक्षीय एवं उभयपक्षीय चापर-चापिंग उपकरण हैं एवं बड़े-बड़े फलक हैं। दक्षिणी क्षेत्र ~~[illegible]~~ में ये उपकरण मुख्य रूप से विभिन्न नदियों के किनारे उपलब्ध है। सर्वप्रथम यह संस्कृति मद्रास के पास उपलब्ध हुई थी। अतः इसे 'मद्रासियन' के नाम से जाना जाता है। इस संस्कृति के उपकरणों में सोहनघाटी के उपकरणों से भिन्नता है।

इन दोनों संस्कृतियों में प्रयाप्त भिन्नता है। अल्डुवाई गार्ज तन्जानिया अफ्रीका इत्यादि स्थानों से संस्कृति का ~~क्रमशः~~ क्रमबद्ध विकास प्रदर्शित होता है।

सोहन संस्कृति :→ सोहन एवं उसकी सहायक नदियों पर समय-समय पर भिन्न-भिन्न देशी एवं विदेशी विद्वानों द्वारा महत्वपूर्ण शोधकार्य होते रहे। डी० एन० वाडिया ने 1928 एवं के० आर० यू० टाड ने

कहा जाता है। ये उपकरण पिंडी, ऐव ढोक पठान आदि स्थानों से प्राप्त हुए हैं। इन उपकरणों को उत्तर पुरापाषाण युगीन उपकरणों के अन्तर्गत रखा गया है। यहाँ से प्राप्त पेबुल पर निर्मित बोरर या आँल विशेष उल्लेखनीय है।

पंचम सोपान (Terrace V):- यह सोपान नदी से स्वाभाविक कटाव के कारण नूतन काल में निर्मित हुआ एवं वर्तमान सोहन नदी के जल स्तर से 20 फुट ऊँचाई पर स्थित है। यह सोपान काली मिट्टी द्वारा निर्मित है। इस सोपान से किसी भी प्रकार के उपकरण नहीं प्राप्त होते हैं परन्तु कुछ मृद्भाण्डों के टुकड़े उपलब्ध हुए हैं जिनके विषय में अनिश्चितता है।

एश्यूलियन संस्कृति :→

यह निम्नपुरापाषाणकालीन संस्कृति की दूसरी उपकरण परम्परा है एवं सर्वप्रथम मद्रासियन के नाम से पहचानी गई थी। ये उपकरण समूह यूरोप एवं अफ्रीका से प्राप्त एश्यूलियन संस्कृति के उपकरणों के समरूप हैं एवं वर्तमान समय में ऐसे उपकरणों समूह भारत में भी एश्यूलियन के नाम से जाने जाते हैं। सर्वप्रथम ऐसे उपकरणों की खोज रार्बट ब्रूस फूट द्वारा 1863 में एक पल्लावरम्-क्षेत्र में की गई। तत्पश्चात यह उपकरण समूह किंग्स द्वारा अतिरम्पक्कम नामक नाले से प्राप्त किया गया। येल कैम्ब्रिज अभियान दल ने भारत के अन्य क्षेत्रों का दौरा किया एवं इस क्षेत्र से प्राप्त उपकरणों का समन्वय प्रातिनूतन कालीन जमावों से स्थापित करने का प्रयास किया। कालान्तर में भारत के विभिन्न क्षेत्रों में इस संस्कृति के प्रमाण स्वीकृत रूप से प्राप्त हुए। निरन्तर खोजों एवं सर्वेक्षणों के उपरान्त एश्यूलियन परम्परा के उपकरण सोहन क्षेत्रों एवं सोहन परम्परा के उपकरण प्रायद्वीपीय भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त हुए।

एश्यूलियन संस्कृति का प्रसार क्षेत्र :— उत्तर में उत्तर प्रदेश से लेकर दक्षिण में तमिलनाडु एवं पश्चिम में गुजरात से लेकर पूर्व में पश्चिम बंगाल तक इस संस्कृति के उपकरण सतह एवं नदियों के किनारे ग्रैवेल से प्राप्त होते हैं। कुछ प्रागैतिहासिक पुरास्थलों का उत्खनन

भी किया जा चुका है। जिसमें ये सबसे नीचले स्तरों से उपलब्ध होते हैं। उत्तर प्रदेश में बेलन घाटी, सिंगरौली घाटी- केनघाटी, बरियारी नाला, पन्नोरवनी घाटी एवं ललितपुर, बांदा क्षेत्र, बिहार में हजारीबाग, संथाल परगना, पीलसा, रांची, पलामू एवं सिंहभूमि, पश्चिम बंगाल में मिदनापुर, पुरुलिया, बांकुरा, जिला उड़ीसा में सुरहावलंग, ब्राह्मणी एवं बैतरणी घाटी, मध्य प्रदेश में सोन एवं नर्मदा घाटी सतना, दमोह, विदिशा, होशंगाबाद, रायसेन, ग्वालियर से प्राप्त अनेक पुरास्थल हैं। इस क्षेत्र में विभिन्न स्थलों से उत्खनन भी हुए हैं जिनमें भीमबेटका, आदमगढ़, महादेव पिपरिया, बुरखेड़ी नाला एवं सोन घाटी मुख्य हैं। इनमें भीमबेटका एवं आदमगढ़ से इस संस्कृति के उत्कृष्ट उदाहरण सबसे नीचले स्तरों से प्राप्त हुए हैं। ये दोनों ही स्थल गुफाओं एवं शैलाश्रयों से सम्बन्धीत हैं जबकि महादेव पिपरिया पर स्थित उपस्थल है। बुरखेड़ी नाला पर ग्रैवेल के उत्खनन के परिणामस्वरूप इस संस्कृति के अवशेष प्राप्त होते हैं

नर्मदा घाटी हमेशा से आकर्षण के केन्द्र रही है। इस घाटी पर दीर्घकाल से शोधकर्ता के फलस्वरूप समय-समय पर विभिन्न पुरावशेष प्रकाश में आते रहते हैं चूंकि इस घाटी से उपकरणों एवं जीवाश्मों की खोज सतही स्तर रूप में हो चुकी थी। अतः डे-टेरा एवं पैटरसन ने इन सामग्रीयों को विभिन्न प्रकार के जमावों से सम्बन्धीत किया। डे-टेरा एवं पैटरसन को इस घाटी के सबसे नीचले सतह पर 'लेटराइट' एवं तदनन्तर "बोल्डर कांग्लोमिरेट" जमाव प्राप्त हुए थे। कालान्तर में - के० डी० बैनर्जी ने भी इस क्षेत्र में प्रतिनूतन कालीन जमावों का अध्ययन किया परन्तु इन्हें बोल्डर कांग्लोमिरेट के नीचे लेटराइट जमाव प्राप्त नहीं हुए। एम० पी० खत्री को इस क्षेत्र से सांस्कृतिक विकास के अवशेष प्राप्त हुए थे परन्तु बाद में एस० जी० सुपेकर को महादेव पिपरिया पर उत्खनन में निम्न पुरापाषाणकालीन उपकरणों के साथ मध्यपुरापाषाणकालीन उपकरण भी प्राप्त हुए

जॉन आरमाण्ड को बुरखेड़ी नाला के उत्खनन के परिणामस्वरूप इस संस्कृति के अवशेष उपलब्ध हुए। इसी दशक में नर्मदा घाटी से हथनोरा

Scanned with CamScanner

नालक- स्थान से मानवाश्म की प्राप्ति अत्यन्त महत्वपूर्ण है परन्तु इस उपलब्धि का अभी तक किसी ~~प्रकार~~ भी सांस्कृतिक- प्रभाव के साथ सम्बन्ध नहीं स्थापित- नहीं किया जा सकता है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि- उत्तरी क्षेत्र विशेष तौर से हिमालय में पेबुल उपकरणों की अधिकता है एवं दक्षिणी क्षेत्र में- हैंडेक्स क्लीवर- उपकरण समूह की। विभिन्न क्षेत्र में सर्वेक्षण के फलस्वरूप एश्यूलियन उपकरणों की प्राप्ति उत्तर भारत और दक्षिण भारत में प्रकाश में आई।

एश्यूलियन क्षेत्र से- पेबुल उपकरणों के स्वतंत्र स्थल प्राप्त हुए हैं इनमें लहचुरा- मुख्य है। इसी प्रकार हिमालय क्षेत्र में चौतरा फांगल रेंज स्थलों का उल्लेख किया जा सकता है। दोनों संस्कृतियों की साथ- साथ उपलब्धि होने के कारण इन संस्कृतियों का विकास साथ-साथ माना जाता है।

Scanned with CamScanner